अथ शनैश्चर अष्टोत्तर शतनामावळिः

ओं शनैश्चराय नमः। ओं शांताय नमः। ओं सर्वाभीष्ट प्रदायिने नमः। ओं शरण्याय नमः। ओं वरेण्याय नमः। ओं सर्वेशाय नमः। ओं सौम्याय नमः। ओं सुरवंद्याय नमः। ओं सुरलोक विहारिणे नमः। ओं सुखासनोपविष्टाय नमः। ओं सुंदराय नमः। ओं घनाय नमः। ओं घनरूपाय नमः। ओं घनाभरण धारिणे नमः। ओं घनसार विलेपाय नमः। ओं खद्योताय नमः। ओं मंदाय नमः। ओं मंदचेष्टाय नमः। ओं महनीय गुणात्माने नमः। ओं मर्त्यपावन पादाय नमः। ओं महेशाय नमः। ओं छायापुत्राय नमः। ओं शर्वाय नमः। ओं शरतूणीर धारिणे नमः। ओं चरस्थिर स्वभावाय नमः। ओं चंचलाय नमः। ओं नीलवर्णाय नमः। ओं नित्याय नमः। ओं नीलांजन निभाय नमः। ओं नीलांबर विभूषणाय नमः। ओं निश्चलाय नमः। ओं वेद्याय नमः। ओं विधिरूपाय नमः। ओं विरोधा धारभूमये नमः। ओं वैरास्वद स्वभावाय नमः। ओं वज्रदेहाय नमः। ओं वैराग्यदाय नमः। ओं वीराय नमः। ओं वीतरोग भयाय नमः। ओं विपत्वरंपरेशाय नमः। ओं विश्ववंद्याय नमः। ओं गृध्रवाहनाय नमः। ओं गूढाय नमः। ओं कूर्मांगाय नमः। ओं कुरूपिणे नमः। ओं कुत्सिताय नमः। ओं गुणाढ्याय नमः। ओं गोचराय नमः। ओं अविद्यामूल नाशनाय नमः। ओं विद्याविद्या स्वरूपिणे नमः। ओं आयुष्य कारणाय नमः। ओं आपदुद्धर्त्रे नमः। ओं विष्णु भक्ताय नमः। ओं वशिने नमः। ओं विविधागम वेदिने नमः। ओं विधिस्तुत्याय नमः। ओं वंद्याय नमः। ओं विरूपाक्षाय नमः। ओं वरिष्ठाय नमः। ओं गरिष्ठाय नमः। ओं वज्रांकुश धराय नमः। ओं वरदाय नमः। ओं अभयहस्ताय नमः। ओं वामनाय नमः। ओं ज्येष्ठापत्नी समेताय नमः। ओं श्रेष्ठाय नमः। ओं अमितभाषिणे नमः। ओं कष्टौघ नाशनाय नमः। ओं आर्यपुष्टिदाय नमः। ओं स्तुत्याय नमः। ओं स्तोत्रगम्याय नमः। ओं भक्तिवश्याय नमः। ओं भानवे नमः। ओं भानुपुत्राय नमः। ओं भव्याय नमः। ओं पावनाय नमः। ओं धनुर्मंडल संस्थाय नमः। ओं धनदाय नमः। ओं धनुष्मते नमः। ओं तनुप्रकाश देहाय नमः। ओं तामसाय नमः। ओं अशेषजनवंद्याय नमः। ओं विशेषफलदायिने नमः। ओं वशीकृतजनेशाय नमः। ओं पशूनांपतये नमः। ओं खेचराय नमः। ओं खगेशाय नमः। ओं घननीलांबराय नमः। ओं काठिन्यमानसाय नमः। ओं आर्यगणस्तुत्याय नमः। ओं नीलच्छत्राय नमः। ओं नित्याय नमः। ओं निर्गुणाय नमः। ओं

गुणात्मने नमः। ओं निरामयाय नमः। ओं निंद्याय नमः। ओं वंदनीयाय नमः। ओं धीराय नमः। ओं दिव्यदेहाय नमः। ओं दीनार्तिहरणाय नमः। ओं दैत्यनाशकराय नमः। ओं आर्यजनगण्याय नमः। ओं क्रूराय नमः। ओं क्रूरचेष्टाय नमः। ओं कामक्रोध धराय नमः। ओं कळत्रपुत्र शत्रुत्वकारणाय नमः। ओं परिपोषितभक्ताय नमः। ओं वरभीतिहराय नमः। ओं भक्तसंघ मनोभीष्टफलदाय नमः। इति शनैश्चर अष्टोत्तर शतनामावळिः॥

For Qualitative Predictions & Potential Remedies visit:
www.astrovidya.com

Click here to go back